श्री दुर्गा देवि कवचं

श्री दुर्गा देवि कवचं

ईश्वर उवाच |
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदं |
पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात् || 1 ||

अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामंत्रं च यो जपेत् |
स नाप्नोति फलं तस्य परत्र नरकं व्रजेत् || 2 ||

उमा देवी शिरः पातु ललाटे शूलधारिणी |
चक्षुषी खेचरी पातु कर्णौ चत्वरवासिनी || 3 ||

सुगंधा नासिके पातु वदनं सर्वधारिणी |
जिह्वां च चंडिकादेवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा || 4 ||

अशोकवासिनी चेतो द्वौ बाहू वज्रधारिणी |
हृदयं ललितादेवी उदरं सिंहवाहिनी || 5 ||

कटिं भगवती देवी द्वावूरू विंध्यवासिनी |
महाबला च जंघे द्वे पादौ भूतलवासिनी || 6 ||

एवं स्थिताऽसि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके |
रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते || 7 ||

इति कुब्जिकातंत्रोक्तं श्री दुर्गा कवचं |